रात्रीक्लास ओमशांति 9–4–67

बाप बच्चों को समझाते हैं। है तो सभी बच्चे बाप के ;परंतु कोई पूरा जानते हैं कोई अधूरा जानते हैं। आगे चल जानते चले जावेंगे। कल्प पहले भी ऐसे हुआ था। कोटों में कोउ जानते हैं.....। बच्चे जानते हैं कि हमको फिर बाप मिला है। उनकी श्रीमत पर चलकर हम वर्सा ले रहे हैं। बाप स्वर्ग की स्थापना करते हैं तो जरूर स्वर्ग का मालिक बनाते होंगे। हम फिर से इस बाबा पास आये हैं। जैसे हम इस शरीर में हैं वैसे बाबा भी इस शरीर में हैं। कहते हैं मैं ज्ञान का सागर हूँ तब तो ज्ञान देता हूँ। यह 84जन्मों का ज्ञान कोई बता नहीं सकते। सृष्टि की आदि,मध्य,अंत का ज्ञान सृष्टि का बीजरूप ही जाने। उंच ते उंच बाप जरूर उंच ते उंच बनाते होंगे। पहले भी हमको बनाया था। भारत में कल्प2 आते हैं। तब तो उनकी जयंती मनाते हैं। शिवबाबा नर्क में आते हैं स्वर्ग रचने। बाबा कहते हैं स्वर्ग मैं स्वर्ग में नहीं आता हूँ, नर्क में ही आता हूँ। मुझे बुलाते ही हैं कि पतित–पावन आओ। पावन बनाकर पावन सृष्टि का मालिक बनाओ। बाप कहते हैं मैं सबका बाप हूँ तो सबको वर्सा देना पड़े। इस समय भी दुःखी हैं। दुनियां का विनाश होगा। जरूर दुःख के पहाड़ गिरेंगे। इतने करोड़ सब खतम हो जावेंगे मच्छरों की तरह। कलियुग और सतयुग में रात–दिन का फर्क है। सतयुग में बहुत थोड़े होते हैं। आत्मायें सब भागेंगी। आगे चलकर तुम बच्चों को यह भी सा. होगा। तुम बच्चों को मालूम है अब घर जाना है। अब बाप आये हैं सबको ले जाने के लिए। कहते हैं मेरे बच्चे काम चिक्षा पर बैठकर भस्म हो गये हैं। अब उन पर ज्ञान वर्षा बरसाता हूँ। नारद भी भक्त था। बोला हम स्वर्ग में चल सकते हैं?लक्ष्मी को वर सकते हैं?तो बोले अपनी शक्ल तो देखो। बाबा कहते हैं अपने अंदर देखो कोई आसुरी गुण तो नहीं है। हमारे में खान–पान आदि का कोई अवगुण तो नहीं है। अब देवताओं जैसा बनना है। देखना चाहिए सारे दिन में किसी को दुःख तो नहीं दिया। कितना समय बाप को याद किया?कितनो को बाप का परिचय दिया। यह अंतिम जन्म है। अब पवित्र बनना है। अब सभी की चढ़ती कला होनी है। बाप कहते हैं रोज अपना पोतामेल रखो कि कोई से लून–पानी तो नहीं हुआ हूँ?ईश्वरीय संतान हो ना। वहां तो शेर–बकरी भी लून–पानी नहीं होते हैं। कुछ हो भी तो बाप बैठे हैं। सभी मतभेद निकाल देंगे। सभी का मतभेद बाप आकर निकालते हैं। वहां पर मतभेद होता ही नहीं। बाप को बताने से बाबा एकमत कर देंगे। नहीं तो कहेंगे बाप यही सिखाते हैं। निंदा करवा देंगे। सतगुरू का निंदक ठौर ना पावे। सतगुरू तो एक ही है। बाकी है भक्ति के गुरू। बाप के लिए उल्टा बता देते हैं। तुम यहां आये हो बाप से वर्सा लेने। विश्व का मालिक बनते हो। आधा कल्प कोई राज्य छीन नहीं सकते। आधा कल्प बाद फिर दूसरे धर्म आते हैं। तो ताली बजनी शुरू हो जाती है। कहीं भी जाओ बैज लगा हुआ हो। उस पर समझाओ। तुम ईश्वरीय मिशन हो ना। तुम हो रुहानी सैलवेशन आर्मी तो नशा होना चाहिए ना। यह भी तुम जानते हो आग जरूर लगनी है। चिंगारी लगी हुई है। फिर सारी दुनियां में फैल जावेगी। बाप कहते हैं चलो अपने घर। इस छी2 दुनियां से पुरानी दुनियां से वैराग है ;क्योंकि बादशाही स्थापन होती है। और कोई राजधानी नहीं स्थापन करते। तुम जो कुछ देते हो शिवबाबा को देते हो। इनको नहीं देते हो। इसने भी सब कुछ बाप को दे दिया कि बच्चों के काम में आ जावे। जो कुछ देना हो बाप को दो। तो बाप फिर गरीबों को दे देंगे। देह भी दे दो। बाकी अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। बाप तो दाता है। सिर्फ युक्तियां बताते हैं। इससे ममत्व मिटाकर नई दुनियां में ममत्व रखो। यह पुराना चोला छोड़ना है। अब हम पावन सम्बंध में जाते हैं। पतित सम्बंध शरीर सहित छोड़ते हैं। पुराना चोला है ;परंतु इससे फिर नया मिलता है। इसलिए ही इनकी भी सम्भाल रखनी है। भोजन भी पवित्र खाना है। मगर बच्चों में अभी पूरी समझ ना होने कारण एक/दो से नफरत करते रहते हैं। आपस में भी ओ बाप से भी नफरत .....रहते हैं तो वो क्या पद पावेंगे?तुमको सारा सा.होता रहेगा। फिर उस समय ध्यान आवेगा कि ओफ यह भी हमने गफलत की। बाप तो फिर कह देते भावी। इनकी तकदीर में ही यही है तो क्या कर सकते हैं?रोज2 समझाते रहते हैं खीरखंड बनो। गुस्सा नहीं करो। .....ओम।